ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह
[1] एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

गोस्वामी तुलसीदास के नारी विषयक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में तुलसी साहित्य के मूर्धन्य विद्वानों में एक मत नही है। 'रामचरितमानस' में उनके द्वारा प्रयुक्त विशेषणों के व्यापक संदर्भ में उनका नारी विषयक दृष्टिकोण सुस्पष्ट लक्षित होता है।

Keywords : . गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, नारी विषयक दृष्टिकोण, तुलसी साहित्य।

Introduction

नारी के विषय में, तुलसी द्वारा प्रयुक्त विशेषण प्रसंगानुकूल एक प्रमुख प्रश्न प्रस्तुत कर देते हैं कि गोस्वामी जी ने नारी के लिए इतने अपकर्षमूलक विशेषणों का प्रयोग क्यों किया? 'रामचरितमानस' में तुलसी द्वारा निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त विशेषण यह जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं कि उनके द्वारा नारी के सम्बन्ध में ये निम्नलिखित अपकर्षमूलक कथन क्यों कहे गये?

(क) अधम ते अधम अधम अति नारी।[1]

(ख) नारि सहज जड़ अग्य।[2]

(ग) जदपि सहज जड़ नारि अयानी।[3]

(घ) विधिहुँ न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी।[4]

(ङ) सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभ गति लहइ।[5]

(च) कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी।।[6]

(छ) काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद, माया रूपी नारि।।[7]

(ज) पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती।।[8]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

(झ) अवगुनमूल सूलप्रद, प्रमदा सब दुखखानि।[9]

(ञ) जदपि जोषितानहिं अधिकारी।[10]

ध्यातव्य है कि नारी के सम्बन्ध में मात्र उन पंक्तियों को ही उद्धृत किया गया है, जिनमें गोस्वामी जी ने मात्र विशेषणों के द्वारा उनकी गतिविधि एवं स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसी संदर्भ में, गोस्वामी जी की नारी के विषय में कही गयी अन्य पंक्तियों को भी उद्धृत कर देना उचित होगा, जिससे उनकी सभी उक्तियों के सम्यक् विवेचन से एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके और गोस्वामी जी की नारी के सम्बन्ध में वास्तविक धारणा का अन्वेषण हो सके। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए –

1. ढोल गँवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।[11]
2. नारिचरित जलनिधि अवगाहू।[12]
3. कवने अवसर का भयउँ, गयऊँ नारि विश्वास।[13]
4. जनि अबला जिमि करुना करहूँ।[14]
5. का न करइ अबला प्रबल, केहि जग कालु न खाय।[15]
6. सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ।।[16]
7. निज प्रतिबिम्ब बरुकु गहि जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई।।[17]
8. समय सुभाउ नारि कर साँचा। मंगल महुँ भय मन अति काँचा।।[18]
9. नारि सुभाव सत्य कबि कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं।।[19]
10. भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी।।
    होइ विकल सक मनहिं न रोकी। जिमि रबि मनि द्रव रबिहिं बिलोकी।।[20]
11. राखिअ नारि जदपि उर माहीं। जुबती शास्त्र नृपति बस नाहीं।।[21]
12. दीन बचन कह बहु विधि रानी। सुन कुबरी तिय माया ठानी।। [22]
13. सती कीन्ह चह तहहुँ दुराऊ। देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ।।[23]
14. उतरु देइ नहिं लेहि उसाँसू। नारि चरित करि ढारइ आँसू।।[24]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

इन समस्त पंक्तियों में गोस्वामी जी ने स्त्रियों की एक–एक मनोदशा, उनके आचार–व्यवहार का दिग्दर्शन कराया है। यह सत्य है कि नारी के विषय में कहीं–कहीं गोस्वामी जी की कटूक्तियाँ उग्रतम हो गयी हैं, जिसके कारण विद्वानों ने गोस्वामी जी पर कड़ा आक्षेप किया है। डॉ0 माता प्रसाद गुप्त जो कि तुलसी–साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान हैं उन्होने भी गोस्वामी जी पर नारी–निन्दा का कड़ा आरोप लगाया है। गोस्वामी जी के सम्बन्ध में उनकी यह पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं – 'नारी–चित्रण' में तुलसी बेहद अनुदार हैं। यद्यपि उनकी इस अनुदारता का कारण अभी तक रहस्य के गर्भ में छिपा हुआ है। कुछ समालोचक कवि की इस अनुदारता पर सफेदी करना चाहते हैं।[25] यह सत्य है कि 'मानस' के उपर्युक्त स्थलों में से कुछ स्थल ऐसे अवश्य हैं, जिनमें नारी के सम्बन्ध में आपाततः उपेक्षा के भाव प्रतीत होते हैं। उन्हीं को लेकर एक बहुत बड़ी भ्रान्ति का सृजन हो गया है, जिसमें कहा गया है कि गोस्वामी जी के हृदय में नारी जाति के प्रति तिरस्कार के भाव विद्यामान थे और तत्प्रसंगों में वही स्वाभाविक रूप से व्यक्त हो गये हैं। किन्तु, यदि हम इस विषय पर गहनता से विचार करें तो इस भ्रान्ति का निराकरण हो जाएगा कि गोस्वामी जी की नारी के सम्बन्ध में भावना अतिशय सात्विक एवं उदार थी। रमणी समाज के प्रति उनके हृदय में कोई व्यक्तिगत बैर–भाव न था। हमें स्मरण करना होगा कि उन्होंने माता सीता समेत कौशल्या आदि नारियों की वन्दना की है।

गोस्वामी जी जैसे सरल संत ने नारी के प्रति ऐसे वाक्यों का प्रयोग क्यों किया? यह एक रोचक, किन्तु विचारणीय प्रश्न है। तुलसी की नारी–विषयक धारणा के उपस्थापन के पूर्व आप का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहते हैं कि तुलसी का जीवन–साध्य एवं उपास्य क्या था? इस प्रश्न को समझने के उपरान्त तुलसी की नारी के प्रति विचारधारा में किंचित संदेह एवं शंका की गुंजाइश नहीं रह जाती है। मेरी मान्यता है कि तुलसी का प्रमुख प्रतिपाद्य जगत्–नियन्ता भगवान राम का स्तवन एवं उनकी पावन भक्ति का उपस्थापन था।[26] इसी कारण से जहाँ कहीं भी अपने इस उद्देश्य में जिस किसी को भी गोस्वामी जी ने बाधक पाया है, वहाँ उन्होंने उस पर कटु प्रहार किया है, क्योंकि वे राम और उनकी भक्ति के बिना अपनी तथा किसी भी प्राणी की कोई गति–यति ही नहीं समझते थे। ध्यातव्य है कि गोस्वामी जी ने नारी को भगवत्भक्ति में साधक न पाकर बाधक पाया है और उनके आराध्य के विरुद्ध नारी का अस्तित्व होने के कारण, उनमें कुछ अमर्षभाव आ जाना स्वाभाविक ही था। इसी कारण वही अमर्षभाव यथास्थल आ भी गया है। इसके अतिरिक्त नारी के विषय में उनके यथास्थल उपकथनों का कोई निमित्त है ही नहीं। विद्वान आलोचकगण तुलसी पर

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

जो नारी–निन्दा का आरोप लगाते हैं, उन्हें लाँछित करते हैं, यह उनका बहुत बड़ा प्रमाद है तथा उनकी बुद्धि का कोरा विलास मात्र। तुलसी–साहित्य के विद्वानों को यह बात भलीभाँति पता है कि राम–भक्ति से विमुख जन को चाहे, वह ब्रह्मा एवं शिव ही क्यों न हों, तुलसी ने तिरस्कार एवं अवमानना का पात्र ही बनाया है। भक्ति से विमुख एवं राम से विरक्त किसी भी जाति, वर्ण, कुल एवं समाज को गोस्वामी जी ने अपनी प्रशंसा का पात्र नहीं बनाया है। ऐसे संदर्भों को ध्यान में लाकर, कवि पर उल्टा–सीधा आरोप लगाना उनके प्रति अन्याय ही होगा। गोस्वामी जी ने–

'विषयी साधक सिद्ध सयाने। त्रिबिध जीव जग बेद बखाने।'[27]

–कहते हुए जीवों को तीन कोटियों में विभक्त किया है। पहली कोटि विषयी लोगों की है। गोस्वामी जी जिस युग में पैदा हुए थे, उसमें विषयी जीवों की भरमार थी। विषयों में सबसे प्रबल है–कामोपभोग और पुरुषों के लिए इसका प्रधान साधन है–प्रमदा अथवा नारी। इसलिए विषयवासना की निन्दा को अपना प्रधान लक्ष्य बनाने वाले गोस्वामी जी ने कहीं–कहीं नारी के प्रति अवश्य ही कुछ अनुदार दृष्टिकोण अपनाया है। गोस्वामी जी का रमणी समाज के प्रति कोई वैयक्तिक बैर–भाव न था। चूँकि विषय–वासनाओं के प्रति तुलसी अनासक्त थे, अतः वासना का प्रधान साधन नारी को साधना–पथ में त्याज्य बताया है। वहाँ भी नारी के कामिनी रूप को ही, अन्य रूपों को नहीं।

यह हुआ गोस्वामी जी के कतिपय नारी–विषयक उपकथनों का संक्षिप्त विवेचन, जिसमें प्रायः उनके प्रत्येक प्रत्यक्ष–परोक्ष नारी विषयक भावों का दिग्दर्शन मिल जाता है। वास्तव में, नारी–निन्दा किसी भी प्रकार से उनका उद्देश्य था ही नहीं, जहाँ कहीं भी नारी के विषय में उनके उपकथन मिलते हैं, वे साभिप्राय हैं। हाँ, यह बात अवश्य है कि कहीं–कहीं उनकी विचारधारा का रूप अधिक उग्र हो उठा है, किन्तु उसके दोषी तुलसी कदापि नहीं ठहराए जा सकते। नारीगत भावनाओं में यत्र–तत्र परिलक्षित उनके अनुदार दृष्टिकोण के प्रबल एवं पुष्ट कारण हैं, जो निम्नांकित हैं :–

1. गोस्वामी जी के ग्रन्थ–प्रणयन का जो उद्देश्य था, यदि हम उस पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि उनके द्वारा जो नारी–निन्दा की गई है, वह अपरिहार्य थी और नारी–निन्दा के उन अंशों को अलग कर देने से नारी के सम्बन्ध में उनकी जो विचारधारा दिखाई देती है, वह अत्यन्त सात्विक एवं समुज्ज्वल है। उसे देखते हुए उनकी दुर्भावना अन्य कहीं भी प्रकट नहीं होती।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

2. गोस्वामी जी ने नारियों को परमगति प्राप्ति में पुरुषों के समतुल्य ही स्थान दिया है। 'राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी।' में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है और श्रेष्ठता के लिए उस सुगम पातिव्रत्य धर्म का संकेत ही बहुत है, जिसको धारण करने से 'बिनु स्रम नारि परमगति लहहीं' की बात गोस्वामी जी कहते हैं।
3. विषय–वासनाओं की प्रतिमूर्ति नारी के प्रमदा स्वरूप के प्रति तुलसी की अनुदार भावना इसलिए है कि राम–भक्ति या जीवन–साधना में वह बाधक सिद्ध होती है। नारी के इस स्वरूप को छोड़कर तुलसी ने अन्य रूपों की प्रशंसा की है।
4. उनका वैरागीपन कामिनी के मोहपाश, रूप–लावण्य से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता था। इसी कारण से नारी के विषयी रूप की आलोचना में वे प्रायः मुखर हो उठे हैं।
5. गोस्वामी जी सूर्पणखा, कैकेयी, मन्थरा आदि सामान्य विषयान्ध नारियों के प्रति अनुदार दिखाई पड़ते हैं, सीता, कौशल्या, सुमित्रा आदि आदर्श–पतिव्रता स्त्रियों के प्रति नहीं। ऐसी रमणियों की तो उन्होंने यत्र–तत्र पूजा की है। [28]

इसके अतिरिक्त नारी–समाज के प्रति उनकी पावन एवं उदार धारणा दिखाई पड़ती है। कुछ प्रमाण देखिए –

1. महाकवि कालिदास की भाँति[29] तुलसी ने भी स्त्रियों को नेक सलाह देने की अधिकारिणी माना है। तारा ने बालि को कितना सत्परामर्श दिया था; परन्तु जब बालि ने नहीं माना तो स्वयं भगवान ने उसे डाँटते हुए कहा था –

'मूढ़ तोहि अतिशय अभिमाना। नारि सिखावन करेसि न काना।।[30]

2. गोस्वामी जी का काव्य लोकहित साधकों के लिए ही नहीं, वरन् आत्महित साधकों के लिए भी उपादेय है। आत्महित की साधना में विषय–निंदा, कामोप भोग–निन्दा पर अन्य आचार्यों द्वारा जितना अधिक कहा गया है, वह देखते हुए गोस्वामी जी की उक्तियाँ उचित ही नहीं, वरन् अनिवार्य प्रतीत होती हैं। लोक–हित के साधक लोग, उन उक्तियों को आत्महित के साधकों के लिए छोड़कर, गोस्वामी जी की अन्य उक्तियों की ओर तथा गोस्वामी जी द्वारा वर्णित स्त्री–पात्रों के चरित्र–चित्रण की ओर क्यों नहीं ध्यान देते?[31]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

3. गोस्वामी जी के स्त्री पात्र बहुत उज्ज्वल रूप में चित्रित हुए हैं और पुरुषों की अपेक्षा उन्होंने भगवत्भक्ति को बहुत अधिक अपनाया है। इस संदर्भ में सीता, सुनयना, कौशल्या, सुमित्रा, अनुसूयादि की तो बात ही क्या है? तारा एवं मन्दोदरी आदि वानर–राक्षस की स्त्रियाँ भी उज्ज्वल चरित्र लिए प्रतीत होती हैं। सीता के रहते हुए भी भगवान जिसे 'भामिनी' कहकर 'मानहु एक भगति कर नाता' की घोषणा करें, उसके परमोज्ज्वल सौभाग्य का क्या ठिकाना? राम–वनवास के सम्बन्ध में गोस्वामी जी ने जिस प्रकार कैकेयी, मन्थरा और सरस्वती तक को दोष से मुक्त किया है, यह देखते हुए कौन कह सकता है कि वे स्त्री जाति से चिढ़े हुए थे? स्त्री जाति के विरोधी थे।

समस्त विश्लेषण के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास जी का नारी के विषय में दृष्टिकोण निन्दात्मक नहीं था। 'मानस' के कुछ प्रसंगों में वे अनुदार अवश्य हो जाते हैं तथा कहीं–कहीं अधिक उग्रतर भी हो गये है। किन्तु नारी–निन्दा उनका कदापि अभिप्रेत नहीं कहा जा सकता। नारी के उस स्वरूप के अतिरिक्त, जिसमें वह कामोपभोग साधन के रूप में आती है, तुलसी ने कहीं भी नारी के प्रति अपनी कुधारणा दिखाई ही नहीं। मर्यादावादी कवि होने के नाते उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिए ही स्त्री–स्वातन्त्र्य–विरोधी वचन कहे हैं। सामाजिक मर्यादा की रक्षा के लिये, प्रमदा के विषय–वासना प्रधान रूप की प्रबलता से जीव–साधक को बचाने के लिए, अपने प्रमुख प्रतिपाद्य की विघ्न से रक्षा के लिये और अपने वैरागी–स्वभाव की सतत् संरक्षा के लिए ही उन्होंने कहीं–कहीं नारी पर कटु प्रहार किये हैं। शेष सर्वत्र स्थानों पर नारी के समुज्ज्वल चरित्र का निरूपण ही किया है। गोस्वामी जी जैसे सरल संत को इससे अधिक इस संदर्भ में कुछ भी अभिप्रेत नहीं था। अतः उनकी नारी के सम्बन्ध में अवधारणा का मूल्यांकन सदैव निष्पक्ष एवं तार्किक दृष्टिकोण से ही करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. मानस 3/35/3
2. मानस 1/57/दो0
3. मानस 2/120/4
4. मानस 2/162/4
5. मानस 3/5/दो0
6. मानस 2/223/6

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

7. मानस 3/43/दो0
8. मानस 7/115/16
9. मानस 3/44/दो0
10. मानस 1/110/1
11. मानस 5/59/6
12. मानस 2/27/7
13. मानस 2/29/दो0
14. मानस 2/150/2
15. मानस 2/47/दो0
16. मानस 2/47/7
17. मानस 2/47/8
18. मानस 2/52/3
19. मानस 6/16/2
20. मानस 3/17/5–6
21. मानस 3/31/2
22. मानस 2/21/3
23. मानस 1/53/5
24. मानस 2/13/6
25. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : तुलसीदास, पृ0सं0 307, तृतीय संस्करण
26. 'यहि महँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।।, तथा
'यहि महँ रघुपति चरित उदारा। अतिपावन पुरान श्रुति सारा।। (मानस 1/10/1)
27. मानस 2/277/3
28. उद्भवस्थिति संहारकारिणीं क्लेश हारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नेतोऽम् रामवल्लभाम्।। (मानस 1/5/श्लोक)
29. गृहिणी सचिव, सखो मिथः प्रिय शिष्या ललिते कला विधौ। (कालिदास)
30. मानस 4/9/9
31. डॉ0 बलदेव प्रसाद मिश्र : तुलसी दर्शन, पृ0सं0 84 ।